UP Board Important Questions Class 11 इतिहास Chapter 4 इस्लाम का उदय और विस्तार-लगभग 570 – 1200 ई० Itihas

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
कबीले का अर्थ स्पष्ट कीजिये।
उत्तर:
कबीले रक्त सम्बन्धों पर संगठित समाज होते हैं।

प्रश्न 2.
इस्लाम धर्म के संस्थापक कौन थे ?
उत्तर:
पैगम्बर मुहम्मद साहब।

प्रश्न 3.
पैगम्बर मुहम्मद ने अपने आपको खुदा का सन्देशवाहक (रसूल) कब घोषित किया ?
उत्तर:
612 ई. के आस-पास।

प्रश्न 4.
कुरान शब्द किससे बना है ?
उत्तर:
इकरा (पाठ करो) से।

प्रश्न 5.
इस्लामी ब्रह्माण्ड विज्ञान में सृष्टि जीवन के तीन बौद्धिक रूपों का उल्लेख कीजिये।
उत्तर:

- दूत
- इन्सान तथा
- जिन्न।

प्रश्न 6.
पैगम्बर मुहम्मद के धर्म – सिद्धान्त को स्वीकार करने वाले लोग क्या कहलाये ?
उत्तर:
मुसलमान।

प्रश्न 7.
प्रथम चार खलीफाओं के नाम लिखिए।
उत्तर:

- अबूबकर
- उमर
- उथमान
- अली।

प्रश्न 8.
इस्लाम का किन दो सम्प्रदायों में विभाजन हुआ?
उत्तर:
(1) सुन्नी तथा
(2) शिया।

प्रश्न 9.
अली के बाद कौन खलीफा बना और कब बना?
उत्तर:
661 ई. में अली के बाद मुआविया खलीफा बना।

प्रश्न 10.
चट्टान के गुम्बद (डोम ऑफ रॉक) का निर्माण किसने करवाया ?
उत्तर:
उमय्यद वंश के शासक अब्द-अल-मलिक ने।

प्रश्न 11.
अब्बासी कौन थे ?
उत्तर:
अब्बासी पैगम्बर मुहम्मद के चाचा अब्बास के वंशज थे।

प्रश्न 12.
अब्बासी वंश की सत्ता को समाप्त कर किस वंश ने अपनी सत्ता स्थापित की और कब ?
उत्तर:
945 ई. में ईरान के बुवाही शिया वंश ने।

प्रश्न 13.
फातिमी राजवंश के लोग कौन थे ?
उत्तर:
ये लोग पैगम्बर साहब की पुत्री फातिमा के वंशज थे।

प्रश्न 14.
निशापुर को किसने अपनी राजधानी बनाया था ?
उत्तर:

https://www.evidyarthi.in/

सल्जुक तुर्कों ने।

प्रश्न 15.
तुगरिल बेग कौन था ?
उत्तर:
तुगरिल बेग सल्जुक तुर्कों का प्रसिद्ध नेता था।

प्रश्न 16.
धर्म – युद्ध कब हुए?
उत्तर:
धर्म – युद्ध 1095 और 1291 ई. के बीच हुए।

प्रश्न 17.
धर्म – युद्ध किन – किनके बीच हुए ?
उत्तर:
पश्चिमी यूरोप के ईसाइयों और मुसलमानों के बीच

प्रश्न 18.
ईसाइयों तथा मुसलमानों में प्रथम धर्म – युद्ध कब हुआ ?
उत्तर:
1098-99 ई. में।

प्रश्न 19.
जजिया कर क्या था ?
उत्तर:
गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला कर जजिया कर कहलाता था।

प्रश्न 20.
इस्लामी राज्य में जिन चार नई फसलों की खेती की गई, उनके नाम लिखो।
उत्तर:

- कपास
- संतरा
- केला
- तरबूजा।

प्रश्न 21.
इस्लामी राज्य के चार फौजी शहरों के नाम लिखिए –
उत्तर:

- कुफा (इराक)
- बसरा (इराक)
- फुस्तात (मिस्र)

- काहिरा (मिस्र)।

प्रश्न 22.
आठवीं तथा नौवीं शताब्दियों में कानून की चार शाखाएँ कौनसी थीं?
उत्तर:

- मलिकी
- हनफी
- शफोई
- हनबली।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
अरब में इस्लाम के उदय के पूर्व अरबों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
अरब में इस्लाम के उदय के पूर्व अरबों की स्थिति –
(1) इस्लाम धर्म के उदय के पूर्व अरब लोग कबीलों में बँटे हुए थे। प्रत्येक कबीले का नेतृत्व एक शेख द्वारा किया जाता था। उसका चुनाव कुछ हद तक पारिवारिक सम्बन्धों के आधार किया जाता था, परन्तु वह अधिकतर व्यक्तिगत साहस, बुद्धिमत्ता और उदारता के आधार पर चुना जाता था। कबीले रक्त सम्बन्धों पर संगठित समाज होते थे।
(2) प्रत्येक कबीले के अपने स्वयं के देवी-देवता होते थे, जो बुतों के रूप में मस्जिदों में पूजे जाते थे
(3) बहुत से अरब कबीले खानाबदोश होते थे। ये लोग खजूर आदि खाद्य तथा अपने ऊँटों के लिए चारे कीतलाश में रेगिस्तान में सूखे – क्षेत्रों से हरे-भरे क्षेत्रों की ओर जाते रहते थे।
(4) कुछ कबीले शहरों में बस गए थे और व्यापार अथवा खेती का काम करने लगे थे।

प्रश्न 2.
कबीले से क्या अभिप्राय है? कबीले की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
कबीले रक्त-सम्बन्धों पर संगठित समाज होते थे। अरबी कबीले वंशों से बने हुए होते थे अथवा बड़े परिवारों के समूह होते थे। गैर- अरब व्यक्ति कबीलों के प्रमुखों के संरक्षण में सदस्य बन जाते थे। लेकिन इनके साथ अरब व्यक्तियों (मुसलमानों) द्वारा समानता का व्यवहार नहीं किया जाता था। गैर – रिश्तेदार वंशों का तैयार किए गए वंश – -क्रम के आधार पर इस आशा के साथ विलय होता था कि नया कबीला शक्तिशाली होगा।

प्रश्न 3.
ब्रददू या बेदूइन के बारे में आप क्या जानते हैं?
उत्तर:
बहुत से अरब कबीले खानाबदोश होते थे, जो बद्‌दू या बेदूइन कहलाते थे। ये लोग ऊँट पशुचारी थे। ये लोग खाद्य

और ऊँटों के लिए चारे की तलाश में रेगिस्तान में सूखे क्षेत्रों से हरे-भरे क्षेत्रों (नखलिस्तान) की ओर भ्रमण रहते थे। खजूर इन लोगों का प्रमुख भोजन था और इसे प्राप्त करने के लिए हरे-भरे क्षेत्रों (नखलिस्तान) की तलाश में रहते थे। कुछ लोग शहरों में बस गए थे और व्यापार अथवा खेती का काम करने लग गए थे।

प्रश्न 4.
पैगम्बर मुहम्मद के प्रादुर्भाव के पूर्व मक्का के धार्मिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
अथवा
काबा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
'मक्का का धार्मिक महत्त्व – पैगम्बर मुहम्मद साहब के प्रादुर्भाव के पूर्व मक्का अरबों का एक प्रमुख धार्मिक केन्द्र था। पैगम्बर मुहम्मद का कबीला कुरैश भी मक्का में रहता था जिसका वहाँ के मुख्य धर्म-स्थल पर नियन्त्रण था। इस धर्म-स्थल का ढाँचा घनाकार था और उसे 'काबा' के नाम से पुकारा जाता था। इसमें बुत रखे हुए थे। मक्का के बाहर के कबीले भी काबा को पवित्र मानते थे। वे इसमें बुत रखते थे और प्रतिवर्ष इस स्थान की धार्मिक यात्रा (हज) करते थे।

मक्का, यमन और सीरिया के बीच के व्यापारी मार्गों के एक चौराहे पर
स्थित था, जिससे शहर का महत्त्व और बढ़ गया था। काबा को एक ऐसा
पवित्र स्थान माना जाता था, जहाँ हिंसा का निषेध था और सभी
दर्शनार्थियों को सुरक्षा प्रदान की जाती थी। तीर्थयात्रा और व्यापार ने खानाबदोश तथा बसे हुए कबीलों को एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित करने तथा अपने विश्वासों और रीति-रिवाजों को आपस में बाँटने का अवसर दिया। बहुदेववादी अरब लोगों को अल्लाह की धारणा के बारे में अस्पष्ट-सी ही जानकारी थी, परन्तु उनका मूर्तियों तथा इबादतगाहों के साथ लगाव सीधा और सुदृढ़ था।

प्रश्न 5.
जिबरील के बारे आप क्या जानते हैं?
उत्तर:
जिबरील – जिबरील एक महादूत थे जो पैगम्बर मुहम्मद साहब के लिए सन्देश लाया करते थे। यह माना जाता है कि जो शब्द उन्होंने सबसे पहले बोला, वह इकरा था। इकरा का अर्थ है – बयान करो। कुरान शब्द इकरा से बना है। इस्लामी ब्रह्माण्ड विज्ञान में दूतों को सृष्टि- जीवन के तीन बौद्धिक रूपों में से एक माना जाता है।

अन्य दो रूप हैं –
(1) इन्सान और
(2) जिन्न।

प्रश्न 6.
इस्लाम धर्म के सुदृढ़ीकरण और उसके प्रचार-प्रसार के लिए पैगम्बर मुहम्मद साहब के द्वारा किये गए कार्यों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
इस्लाम धर्म के सुदृढ़ीकरण और उसके प्रचार-प्रसार के लिए पैगम्बर मुहम्मद साहब के कार्य –
(1) मदीना में राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना – पैगम्बर मुहम्मद साहब ने मदीना में एक राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसने उनके अनुयायियों को सुरक्षा प्रदान की और इसके साथ-साथ शहर में चल रही कलह को सुलझाया।

(2) उम्मा को एक बड़े समुदाय के रूप में बदलना – उन्होंने उम्मा को एक बड़े समुदाय के में बदल दिया गया ताकि मदीना के बहुदेववादियों तथा यहूदियों को पैगम्बर मुहम्मद के राजनीतिक नेतृत्व के अन्तर्गत लाया जा सके।

(3) कर्मकाण्डों और नैतिक सिद्धान्तों में वृद्धि एवं सुधार करना – पैगम्बर मुहम्मद साहब ने कर्मकाण्डों जैसे उपवास आदि और नैतिक सिद्धान्तों में वृद्धि तथा सुधार करके इस्लाम धर्म को अपने अनुयायियों के लिए सुदृढ़ बनाया।

(4) मक्का पर अधिकार – पैगम्बर मुहम्मद ने मक्का पर भी अधिकार कर लिया । इसके परिणामस्वरूप एक धार्मिक प्रचारक तथा राजनीतिक नेता के रूप में पैगम्बर मुहम्मद साहब की प्रतिष्ठा दूर-दूर तक फैल गई।

(5) अनेक कबीलों द्वारा इस्लाम धर्म ग्रहण करना – पैगम्बर मुहम्मद की शिक्षाओं और उपलब्धियों से प्रभावित होकर बहुत से कबीलों ने अधिकांशतः बद्दुओं ने, इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया और उस समाज में शामिल हो गए।

(6) प्रशासनिक राजधानी एवं धार्मिक केन्द्र की स्थापना – शीघ्र ही पैगम्बर मुहम्मद द्वारा संरचित गठजोड़ का प्रसार सम्पूर्ण अरब देश में हो गया । मदीना इस्लामी राज्य की प्रशासनिक राजधानी तथा मक्का उसका धार्मिक केन्द्र बन गया।

प्रश्न 7.
खिलाफत की संस्था का निर्माण किस प्रकार हुआ ? इसके क्या उद्देश्य थे?
उत्तर:
खिलाफत की संस्था का निर्माण- सन् 632 में पैगम्बर मुहम्मद साहब की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के बाद कोई भी व्यक्ति वैध रूप से इस्लाम का अगला पैगम्बर होने का दावा नहीं कर सकता था। अतः उनकी राजसत्ता उम्मा को सौंप दी गई। इससे मुसलमानों में गहरे मतभेद उत्पन्न हो गए। सबसे बड़ा नव-परिवर्तन यह हुआ कि खिलाफत की संस्था का निर्माण हुआ। इसमें समुदाय का नेता अर्थात् अमीर अल-मोमिनिन पैगम्बर का प्रतिनिधि (खलीफा) बन गया। पहले चार खलीफाओं (632-661 ई.) ने पैगम्बर के साथ अपने गहरे और निकटतम सम्बन्धों के आधार पर अपनी शक्तियों तथा अधिकारों का औचित्य स्थापित किया।
खिलाफत के उद्देश्य –
(1) उम्मा के कबीलों पर नियन्त्रण स्थापित करना।
(2) राज्य के लिए संसाधन जुटाना।

प्रश्न 8.
खलीफाओं के शासन काल में इस्लामी राज्य के विस्तार का वर्णन
कीजिए।
उत्तर:
खलीफाओं के शासन काल में इस्लामी राज्य का विस्तार –
(1) प्रथम खलीफा – पैगम्बर मुहम्मद के देहावसान के बाद बहुल से कबीले इस्लामी राज्य से टूट कर अलग हो गए। कुछ कबीलों ने स्वयं अपने समाजों की स्थापना हेतु अपने स्वयं के पैगम्बर बना लिए थे। इस स्थिति में प्रथम खलीफा अबूबकर ने अनेक अभियानों द्वारा विद्रोहों का दमन किया।

https://www.evidyarthi.in/

(2) द्वितीय खलीफा – दूसरे खलीफा उमर और उसके सेनापतियों ने पश्चिम में बाइजेन्टाइन समुदाय और पूर्व में 'ससानी साम्राज्य के विरुद्ध अभियान किये। तीन सफल अभियानों (637-642 ई.) में अरबों ने सीरिया, इराक ईरान और मिस्र पर अधिकार कर लिया।

(3) तृतीय खलीफा -तृतीय खलीफा, उथमान (644-656) ने अपना नियन्त्रण मध्य एशिया तक बढ़ाने के लिए और अभियान चलाए। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के एक दशक के अन्दर अरब-इस्लामी राज्य ने नील और आक्सस के बीच के विशाल क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व एवं नियन्त्रण स्थापित कर लिये।

प्रश्न 9.
विजित प्रान्तों में खलीफाओं द्वारा स्थापित प्रशासनिक ढाँचे का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
विजित प्रान्तों में खलीफाओं द्वारा नया प्रशासनिक ढाँचा स्थापित किया गया। इसकी प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थीं-
(1) नये प्रशासनिक ढाँचे के अध्यक्ष गवर्नर (अमीर) तथा कबीलों के मुखिया (अशरफ) थे।
(2) केन्द्रीय राजकोष के दो प्रमुख स्रोत थे –

- मुसलमानों द्वारा अदा किये जाने वाले कर तथा
- सैनिक अभियानों. द्वारा मिलने वाली लूट में से प्राप्त हिस्सा।

(3) खलीफा के सैनिक रेगिस्तान के किनारों पर बसे शहरों जैसे कुफा तथा बसरा में शिविरों में रहते थे ताकि वे अपने प्राकृतिक आवास स्थलों के निकट तथा खलीफा की कमान के अन्तर्गत बने रहें।

(4) शासक वर्ग और सैनिकों को लूट में हिस्सा मिलता था और मासिक अदायगियाँ प्राप्त होती थीं।

(5) गैर – मुस्लिम लोगों को खराज और जजिया नामक कर देने पड़ते थे । इन करों के अदा करने पर ही उनका सम्पत्ति का तथा धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने का अधिकार बना रहता था।

(6) यहूदी और ईसाई मुस्लिम- – राज्य के संरक्षित लोग (धिम्मीस) घोषित किये गए और अपने सामुदायिक कार्यों को करने के लिए उन्हें काफी अधिक स्वायत्तता दी गई थी।

प्रश्न 10.
तृतीय खलीफा उथमान की हत्या के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
तृतीय खलीफा उथमान की हत्या के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ-
(1) अरब कबीले राजनैतिक विस्तार तथा एकीकरण का कार्य सरलता से नहीं कर पाये। इस्लामी राज्य के विस्तार से तथा संसाधनों और पदों के वितरण के सम्बन्ध में उत्पन्न हुए झगड़ों से उम्मा की एकता खतरे में पड़ गई।

(2) प्रारम्भिक इस्लामी राज्य के शासन में मक्का के कुरैश लोगों का ही बोलबाला था। तृतीय खलीफा उथमान (644- 656) भी एक कुरैश था। उसने सत्ता पर अधिक नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए प्रशासन में अपने ही व्यक्ति नियुक्त कर दिए। 'परिणामस्वरूप अन्य कबीलों में असन्तोष उत्पन्न हुआ और वे उथमान का विरोध करने लगे।

(3) तृतीय खलीफा उथमान की नीतियों से इराक तथा मिस्र में तो पहले से ही विरोध था। अब मदीना में भी विरोध उत्पन्न हो जाने से 656 ई. में उथमान की हत्या कर दी गई।

प्रश्न 11.
चतुर्थ खलीफा अली के शासन काल की प्रमुख घटनाओं का वर्णन कीजिए ।
उत्तर:
चतुर्थ खलीफा अली के शासन काल की प्रमुख घटनाएँ – चतुर्थ खलीफा अली के शासन काल की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित थीं-
(1) 656 में अली को चतुर्थ खलीफा नियुक्त किया गया। उसने मक्का के अभिजात – तन्त्र का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों के विरुद्ध दो युद्ध लड़े। इसके फलस्वरूप मुसलमानों में कटुता और बढ़ गई। अली के समर्थकों और शत्रुओं ने बाद में इस्लाम के दो मुख्य सम्प्रदाय शिया और सुन्नी बना लिए।

(2) अली ने अपनी सत्ता कुफा में स्थापित कर ली। उसने पैगम्बर मुहम्मद की पत्नी आयशा के नेतृत्व में लड़ने वाली सेना को 657 ई. में 'ऊँट की लड़ाई' में पराजित कर दिया। लेकिन, वह उथमान (तृतीय खलीफा) के नातेदार और सीरिया के गवर्नर मुआविया के नेतृत्व वाले गुट का दमन नहीं कर सका।

(3) अली को सिफ्फिन (उत्तरी मेसोपोटामिया) में दूसरा युद्ध लड़ना पड़ा जो सन्धि के रूप में समाप्त हुआ। इसके परिणामस्वरूप उसके अनुयायी दो गुटों में बँट गए, कुछ उसके वफादार बने रहे, जबकि अन्य लोगों ने उसका साथ छोड़ दिया और वे खरजी कहलाने लगे।

(4) इसके शीघ्र बाद, कुफा में एक खरजी ने एक मस्जिद में अली की हत्या कर दी।

प्रश्न 12.
अब्द-अल-मलिक द्वारा सिक्कों में क्या सुधार किए गए ?
उत्तर:
(1) अब्द-अल-मलिक के पहले जो सिक्के चल रहे थे, वे रोमन और ईरानी अनुकृतियाँ थे जिन पर सलीब और अग्नि – वेदी के चिह्न बने होते थे और यूनानी तथा पहलवी भाषा में लेख अंकित होते थे। अब्द अल-मलिक ने इन चिह्नों को हटवा दिया और सिक्कों पर अरबी भाषा में लेख अंकित कर दिया।
(2) अब्द-अल-मलिक द्वारा सिक्कों में किए गए सुधार उसके राज्य – वित्त के पुनर्गठन से जुड़े हुए थे।
(3) अब्द-अल-मलिक की सिक्के ढालने की प्रक्रिया इतनी सफल थी कि उसके सिक्कों के प्रारूप व वजन के अनुसार ही कई शताब्दियों तक सिक्के ढाले जाते रहे।

प्रश्न 13.
उमय्यद खलीफा शब्द अल-मलिक द्वारा अपनायी गयी नीतियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
शब्द अल-मलिक द्वारा अपनायी गयी नीतियाँ –
(1) शब्द अल-मलिक और उसके उत्तराधिकारियों के शासन काल में अरब और इस्लाम दोनों पहचानों पर मजबूती से बल दिया जाता रहा।
(2) शब्द अल-मलिक ने अरबी को प्रशासन की भाषा के रूप में अपनाया।
(3) उसने सिक्कों से रोमन तथा ईरानी चिन्हों को हटाकर उन पर अरबी भाषा में लिखा गया। इस प्रकार उसने इस्लामी सिक्कों को जारी किया।
(4) उसने जेरूसलम में डोम ऑफ रॉक बनवाकर अरब-इस्लामी पहचान को विकसित किया।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 14.
उमय्यदों के किन राजनैतिक उपायों से उम्मा के भीतर उनका नेतृत्व सुदृढ़ हुआ?
उत्तर:
उमय्यदों ने ऐसे बहुत से राजनैतिक उपाय किए जिनसे उम्मा के भीतर उनका नेतृत्व सुदृढ़ हो गया –
(1) प्रथम उमय्यद खलीफा मुआविया ने दमिश्क को अपनी राजधानी बनाया।
(2) उसने बाइजेंटाइन साम्राज्य की राजदरबारी रस्मों और प्रशासनिक संस्थाओं को अपना लिया।
(3) उसने वंशगत उत्तराधिकार की परम्परा भी प्रारंभ की और प्रमुख मुसलमानों को मना लिया कि वे उसके पुत्रों को उसका वारिस स्वीकार करें।
(4) बाद वाले खलीफाओं ने भी ये नवीन परिवर्तन अपना लिए।
इन राजनैतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप उमय्यद राज्य एक साम्राज्यीय शक्ति बन गया। वह सीधे इस्लाम पर आधारित न होकर शासन – कला और सैनिकों की वफादारी के बल पर चल रहा था तथा इस्लाम उसे वैधता प्रदान करता रहा।

प्रश्न 15.
सन् 950 से 1200 तक की अवधि में इस्लामी समाज की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
सन् 950 से 1200 तक की अवधि में इस्लामी समाज किसी एकल राजनीतिक व्यवस्था अथवा किसी संस्कृति की एकल भाषा अरबी से नहीं, बल्कि सामान्य आर्थिक और सांस्कृतिक प्रतिरूपों से एकजुट बना रहा। इस एकता को बनाए रखने के लिए राज्य और समाज को अलग माना गया। इसके अतिरिक्त इस्लामी उच्च संस्कृति की भाषा के रूप में फारसी का विकास किया गया। इस एकता के निर्माण में विद्वानों, कलाकारों, व्यापारियों आदि ने भी योगदान दिया। विद्वान, कलाकार, व्यापारी आदि इस्लामी राज्य में घूमते रहते थे । इससे लोगों में विचारों तथा तौर-तरीकों का आदान-प्रदान होता रहता था । इसके फलस्वरूप अनेक लोग इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेते थे। परिणामस्वरूप मुसलमानों की जनसंख्या आगे चलकर बहुत अधिक बढ़ गई। इस्लाम ने एक अलग धर्म तथा सांस्कृतिक प्रणाली के रूप में अपनी पहचान बना ली।

प्रश्न 16.
दसवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दियों में तुर्की सल्तनत का उदय किस प्रकार
हुआ ?
उत्तर:
दसवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दियों में तुर्की सल्तनत का उदय हुआ। तुर्क, तुर्किस्तान के मध्य एशियाई घास के मैदानों के खानाबदोश कबाइली लोग थे जिन्होंने धीरे-धीरे इस्लाम धर्म अपना लिया था। तुर्क कुशल घुड़सवार तथा वीर योद्धा थे। वे गुलामों और सैनिकों के रूप में अब्बासी, समानी तथा बुवाही शासकों के अधीन कार्य करने लगे। 961 ई. में अल्पतिगिन ने गजनी सल्तनत की स्थापना की। गजनी सल्तनत को मजबूत बनाने में महमूद गजनवी (998-1030 ई.) ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

गजनवी वंश एक सैनिक वंश था जिसके पास तुर्कों और भारतीयों जैसी पेशेवर सेना थी । उनकी सत्ता और शक्ति का केन्द्र खुरासान ओर अफगानिस्तान था। इसलिए उनके लिए अब्बासी प्रतिद्वन्द्वी नहीं थे, बल्कि उनकी वैधता के स्रोत थे। महमूद गजनवी जानता था कि वह एक गुलाम का पुत्र था और इस कारण वह खलीफा से सुल्तान की उपाधि प्राप्त करने के लिए लालायित था। दूसरी और खलीफा भी गजनवी जो सुन्नी था, को समर्थन देने के लिए सहमत हो गया था।

प्रश्न 17.
सलजुक तुर्कों द्वारा तुर्क – साम्राज्य के विस्तार के लिए किये गए प्रयासों का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
सलजुक तुर्क समानियों और काराखानियों की सेनाओं में सैनिकों के रूप में तूरान में प्रविष्ट हो गए। उन्होंने बाद में दो भाइयों तुगरिल और छागरी बेग के नेतृत्व में एक शक्तिशाली समूह का रूप धारण कर लिया। महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद सलजुक तुर्कों ने 1037 ई. में खुरासान पर अधिकार कर लिया और निशापुर को अपनी राजधानी बनाया। कुछ समय बाद उन्होंने 1055 में बगदाद को पुनः सुन्नी शासन के अधीन कर दिया।

खलीफा अल- कायम ने तुगरिल बेग को सुल्तान की उपाधि प्रदान की जिसके फलस्वरूप धार्मिक सत्ता राजनीतिक सत्ता से अलग हो गई। दोनों सलजुक भाइयों ने इकट्ठे मिलकर शासन का संचालन किया। इसके बाद उनका भतीजा अल्प अरसलन गद्दी पर बैठा। उसके शासन काल में सलजुक साम्राज्य का विस्तार अनातोलिया (आधुनिक तुर्की) तक हो गया।

प्रश्न 18.
इस्लामी राज्य में कृषि की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
इस्लामी राज्य में कृषि की स्थिति – अरबों द्वारा नए जीते गए क्षेत्रों में बसे हुए लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था। इस्लामी राज्य ने इसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। जमीन के स्वामी बड़े और छोटे किसान थे। कहीं-कहीं राज्य का स्वामित्व भी था। इराक और ईरान में जमीन काफी बड़ी इकाइयों में बँटी हुई थी, जिसकी खेती कृषकों द्वारा की जाती थी। ससानी और इस्लामी कालों में भूमि के स्वामी राज्य की ओर से कर इकट्ठा करते थे।

उन प्रदेशों में, जो पशुचारण की अवस्था से आगे बढ़ कर स्थिर कृषि व्यवस्था तक पहुँच गए थे, जमीन गाँव की सांझी सम्पत्ति थी। जो भूमि- सम्पत्तियाँ इस्लामी विजय के पश्चात् स्वामियों द्वारा छोड़ दी गई थीं, उन्हें राज्य ने अपने हाथ में ले लिया था । इसे साम्राज्य के विशिष्ट वर्ग के मुसलमानों को दे दी गई थी, विशेष रूप से खलीफा के परिवार के सदस्यों को।

प्रश्न 19.
इस्लामी राज्य में कृषि भूमि के नियन्त्रण एवं भू-राजस्व व्यवस्था की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
इस्लामी राज्य में कृषि भूमि का सर्वोपरि नियन्त्रण राज्य के हाथों में था। राज्य अपनी अधिकांश आय भू- राजस्व से प्राप्त करता था । अरबों द्वारा जीती गई भूमि पर जो मालिकों के हाथों में रहती थी, कर (खराज) लगता था। खराज खेती की स्थिति के अनुसार उपज के आधे हिस्से से लेकर उसके पाँचवें हिस्से के बराबर होता था । जिस भूमि पर मुसलमानों का स्वामित्व था अथवा जिसमें उनके द्वारा खेती की जाती थी, उस पर उपज के दसवें हिस्से के बराबर कर लगता था।

जब गैर-मुसलमान कम कर देने के उद्देश्य से मुसलमान बनने लगे, तो उससे राज्य की आय कम हो गई। इस पर खलीफाओं ने पहले तो धर्मान्तरण को निरुत्साहित किया और बाद में कराधान की एकसमान नीति अपनाई। दसवीं शताब्दी से राज्य ने अधिकारियों को उनका वेतन भूमियों के राजस्व से देना शुरू किया। इसे 'इक्का' कहा जाता था, जिसका अर्थ है- 'राजस्व का हिस्सा'।

प्रश्न 20.
इस्लामी राज्य में खेती में समृद्धि राजनीतिक स्थिरता के साथ-साथ कैसे आई? इस सम्बन्ध में राज्य द्वारा क्या उपाय किये गए ?

https://www.evidyarthi.in/

उत्तर:
इस्लामी राज्य में खेती में समृद्धि – इस्लामी राज्य में खेती में समृद्धि राजनीतिक स्थिरता के साथ-साथ आई। इस सम्बन्ध में राज्य ने निम्नलिखित उपाय किये–
(1) नीलघाटी सहित अनेक क्षेत्रों में राज्य ने सिंचाई प्रणालियों का विकास किया। राज्य ने अनेक बाँधों तथा नहरों का निर्माण करवाया और अनेक कुएँ खुदवाये।
(2) अपनी भूमि पर पहली बार खेती करने वाले कृषकों को कर में छूट दी गई।
(3) खेती – योग्य भूमि का विस्तार किया गया। इन उपायों के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि हुई।
(4) कुछ नई फसलों, जैसे कपास, संतरा, केला, तरबूज, पालक और बैंगन की खेती की गई और इन फसलों का यूरोप को निर्यात किया गया।

प्रश्न 21.
"मध्यकालीन आर्थिक जीवन में मुस्लिम जगत का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने अदायगी और व्यापार व्यवस्था के उत्तम तरीकों को विकसित किया।" विवेचना कीजिए।
अथवा
मध्यकालीन इस्लामी राज्य में साख-पत्रों तथा हुण्डियों का उपयोग किस प्रकार किया जाता था ?
उत्तर:
साख-पत्रों तथा हुण्डियों का उपयोग – मध्यकालीन आर्थिक जीवन में मुस्लिम जगत का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने अदायगी और व्यापार व्यवस्था के उत्तम तरीकों को विकसित किया। व्यापारियों तथा साहूकारों द्वारा धन को एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए साख-पत्रों (सक्क) तथा हुण्डियों (बिल ऑफ एक्सचेंज – सुफतजा) का उपयोग किया जाता था। वाणिज्यिक पत्रों के व्यापक उपयोग से व्यापारियों को प्रत्येक स्थान पर नकद मुद्रा अपने साथ ले जाने से मुक्ति मिल गई और इससे उनकी यात्राएँ पहले की तुलना में अधिक सुरक्षित हो गईं। खलीफा भी वेतन देने अथवा कवियों और चारणों को इनाम देने के लिए साख-पत्रों (सक्क) का प्रयोग करते थे।

प्रश्न 22.
उलमा कौन थे? उनके क्या कार्य थे?
उत्तर:
उलमा इस्लाम के धार्मिक विद्वान थे। वे कुरान से प्राप्त ज्ञान (इल्म) और पैगम्बर के आदर्श व्यवहार (सुन्ना) का मार्गदर्शन करते थे। मध्यकाल में उलमा अपना समय कुरान पर टीका (तफसीर) लिखने और पैगम्बर मुहम्मद की प्रामाणिक उक्तियों और कार्यों को लेखबद्ध (हदीथ) करने में लगाते थे। कुछ उलेमाओं ने कर्मकाण्डों (इबादत) के द्वारा ईश्वर के साथ मुसलमानों के सम्बन्धों को नियन्त्रित करने और सामाजिक कार्यों (मुआमलात) के द्वारा अन्य व्यक्तियों के साथ मुसलमानों के सम्बन्धों को नियन्त्रित करने के लिए कानून अथवा शरीआ तैयार करने का काम किया। इस्लामी कानून तैयार करने के लिए विधिवेत्ताओं ने तर्क और अनुमान (कियास) का प्रयोग भी किया। आठवीं तथा नौवीं शताब्दी में कानून की चार शाखाएँ (मजहब) बन गईं। ये शाखाएँ थीं –

- मलिकी
- हनफी
- शफीई
- हनबली।

प्रश्न 23.
'कुरान शरीफ' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
कुरान शरीफ- अरबी भाषा में रचित कुरान शरीफ 114 अध्यायों (सूराओं) में विभाजित है। मुस्लिम परम्परा के अनुसार, कुरान उन सन्देशों (रहस्योद्‌घाटन) का संग्रह है, जो खुदा ने पैगम्बर मुहम्मद साहब को 610 तथा 632 के बीच की अवधि में पहले मक्का में और फिर मदीना में दिए थे। इन रहस्योद्‌घाटनों को संकलित करने का कार्य 650 में पूरा किया गया था। वर्तमान में जो सबसे प्राचीन सम्पूर्ण कुरान उपलब्ध है, वह नौवीं शताब्दी की है। कुरान शरीफ मुसलमानों का पवित्र ग्रन्थ है। कुरान शरीफ के अध्याय 31, पद 27 में कहा गया है कि "यदि संसार के सभी पेड़ कलम होते और समुद्र स्याही होते और इस तरह सात समुद्र स्याही की पूर्ति करने के लिए होते, तो भी लिखते-लिखते अल्लाह के शब्द समाप्त न होते। "

प्रश्न 24.
प्रारम्भिक इस्लाम के इतिहास के लिए स्रोत सामग्री के रूप में कुरान के उपयोग ने कौनसी समस्याएँ प्रस्तुत की हैं?
अथवा
मध्यकालीन इस्लामी राज्य में उलमा वर्ग कुरान पर टीकाएँ लिखने के लिए क्यों प्रेरित हुआ?
उत्तर:
(1) कुरान एक धर्म-ग्रन्थ है- पहली समस्या यह है कि कुरान शरीफ एक धर्म-ग्रन्थ है। यह एक ऐसा मूल पाठ है, जिसमें धार्मिक सत्ता निहित है। प्रायः मुसलमान यह मानते हैं कि खुदा की वाणी (कलाम अल्लाह) होने के कारण कुरान को शब्दश: समझा जाना चाहिए। परन्तु बुद्धिवादी धर्म विज्ञानी अधिक उदार विचारों वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कुरान की व्याख्या अधिक उदारता से की। 833 ई. में अब्बासी खलीफा अल – मामून मत लागू किया कि कुरान खुदा की वाणी की बजाय उसकी रचना है।

(2) कुरान प्रायः रूपकों में बात करता है – दूसरी समस्या यह है कि कुरान प्रायः रूपकों में बात करता है। ओल्ड टेस्टामेन्ट के विपरीत, यह घटनाओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि केवल उनका उल्लेख करता है। इसलिए मध्यकाल के मुस्लिम विद्वानों को पैगम्बर मुहम्मद के वचनों के अभिलेखों (हदीथ) की सहायता से कई टीकाएँ लिखनी पड़ी थीं। कुरान को पढ़ने-समझने के लिए कई हदीथ लिखे गए।

प्रश्न 25.
सूफियों के धार्मिक सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
अथवा
'सूफीवाद' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
अथवा
मध्यकालीन इस्लाम में सूफियों के धार्मिक विचार बताइये।
उत्तर:
मध्यकालीन इस्लाम के धार्मिक विचारों वाले लोगों का एक समूह बन गया था, जिन्हें सूफी कहा जाता है। उनके धार्मिक सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –
(1) सूफी लोग तपश्चर्या (रहबनिया) तथा रहस्यवाद के द्वारा खुदा का अधिक गहन और अधिक वैयक्तिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे।

(2) सूफियों की भौतिक पदार्थों तथा सांसारिक सुखों में रुचि नहीं थी। ये लोग संसार का त्याग करना चाहते थे और केवल खुदा पर भरोसा करते थे

https://www.evidyarthi.in/

(3) सर्वेश्वरवाद ईश्वर और उसकी सृष्टि के एक होने का विचार है जिसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य की आत्मा को परमात्मा के साथ मिलाना चाहिए।

(4) सूफीवाद के अनुसार ईश्वर से मिलना, ईश्वर के साथ तीव्र प्रेम (इश्क) के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इस इश्क का उपदेश एक महिला सन्त बसरा की राबिया द्वारा अपनी शायरी में दिया गया था। ईरानी सूफी बयाजिद बिस्तामी प्रथम व्यक्ति था जिसने अपने आप को खुदा में लीन या फना करने का उपदेश दिया था।

(5) सूफी लोग आनन्द उत्पन्न करने तथा प्रेम और भावावेश को तीव्र करने के लिए संगीत समारोहों (सभा) का उपयोग करते हैं।

(6) सूफीवाद का द्वार सबके लिए खुला है

प्रश्न 26.
इब्नसिना के साहित्यिक योगदान का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
इब्नसिना (980-1037 ई.) एक प्रसिद्ध चिकित्सक और दार्शनिक था । वह इस बात को नहीं मानता था कि कयामत के दिन व्यक्ति पुनः जीवित हो जाता है। उन्होंने 'चिकित्सा के सिद्धान्त' (अल-कानून फिलतिब) नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी, जो दस लाख शब्दों वाली पाण्डुलिपि थी। इस पुस्तक में तत्कालीन औषधशास्त्रियों द्वारा बेची जाने वाली 760 औषधियों का उल्लेख है। इसमें इब्नसिना द्वारा अस्पतालों में किये गए प्रयोगों तथा अनुभवों की जानकारी भी दी गई है।

इस पुस्तक में आहार – विज्ञान के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। इसमें यह बताया गया है कि जलवायु और पर्यावरण का स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त कुछ रोगों के संक्रामक स्वरूप की जानकारी भी दी गई है । इस पुस्तक का महत्त्व इस बात से प्रकट हो जाता है कि इस पुस्तक का उपयोग यूरोप में एक पाठ्यपुस्तक के रूप में किया जाता था।

प्रश्न 27.
मध्यकालीन इस्लामी राज्य में भाषा और साहित्य के विकास की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
मध्यकालीन इस्लामी राज्य में श्रेष्ठ भाषा और सृजनात्मक कल्पना को व्यक्ति के सर्वाधिक प्रशंसनीय गुणों में शामिल किया जाता था । ये गुण किसी भी व्यक्ति की विचार – अभिव्यक्ति को अदब के स्तर तक ऊँचा उठा देते थे। इस्लाम – पूर्व काल की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना संबोधन गीत (कसीदा) था।

अब्बासी – काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की उपलब्धियों का गुणगान करने के लिए संबोधन गीत नामक विधा का विकास किया। फारसी मूल के कवियों ने अरबी कविता में नये प्राण फूँके । फारसी मूल के एक कवि अबुनुवास ने इस्लाम द्वारा वर्जित आनन्द मनाने के उद्देश्य से शराब और पुरुष – प्रेम जैसे नये विषयों पर श्रेष्ठ कविताओं की रचना की । सूफियों ने रहस्यवादी प्रेम की सुरा द्वारा उत्पन्न मस्ती का गुणगान किया।